आत्मा का अभिवादन करो

बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के उपलक्ष्य में
सिद्धयोग सत्संग

आत्मीय पाठक,

नमस्ते।

भारत में, कई सदियों पहले, ब्रह्माण्ड और ईश्वर के विषय में गूढ़ सच्चाइयाँ केवल उन्हीं लोगों के लिए सुलभ थीं जो विद्वान थे या किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार के सदस्य होते थे। इसका कारण यह था कि संस्कृत भाषा का ज्ञान केवल उन्हीं लोगों को था। संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है और अधिकतर शास्त्र संस्कृत में ही रचित हैं।

कालान्तर में, सन्तों व सिद्धों का उल्लेखनीय आविर्भाव हुआ जिन्होंने अपनी महत् करुणा व उदारता से शास्त्रों के अतुलनीय प्रज्ञान को जनसाधारण की भाषा में उपलब्ध कराया—ऐसी भाषा में जिसे भारत की सामान्य जनता बोलती व समझती हो। इस प्रकार, अब हर कोई शास्त्रों के प्रज्ञान को समझ पाता था, ईश्वर का अनुभव करने के उपाय प्राप्त कर पाता था और यह सीख पाता था कि एक अर्थपूर्ण जीवन कैसे जीना चाहिए। सन्तों व सिद्धों ने इन सिखावनियों को प्रदान करने का जो माध्यम अपनाया, वह था, सत्संग।

हमारे समय के महान सिद्धों में से एक थे, बाबा मुक्तानन्द। अपने सत्संगों के माध्यम से उन्होंने हज़ारों लोगों के जीवन को रूपान्तरित किया। वे बाबा जी ही थे जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को शक्तिपात से अवगत कराया व इसे उपलब्ध कराया और १९७० के दशक में, पाश्चात्य जगत को इस सर्वाधिक अद्‌भुत आध्यात्मिक समारोह से परिचित कराया, जिसे 'सत्संग' कहते हैं।

अक्टूबर का माह, सिद्धयोगियों व नए साधकों के लिए वर्ष का असाधारण समय होता है, क्योंकि इस समय हम बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि की तिथि का सम्मान करते हैं अर्थात् वह समय जब वे अपनी भौतिक देह को त्यागकर ब्रह्माण्डीय चिति में विलीन हो गए थे।

भारत में जब कोई महात्मा अपनी देह का त्याग करते हैं तब उसे मृत्यु की अन्तिम अवस्था नहीं माना जाता। अपने जीवनकाल में एक महात्मा अकसर सहज-स्वाभाविक रूप से गहन ध्यान की अवस्था में उतरते हैं, जिसे 'समाधि' भी कहा जाता है। जब वे अन्ततः अपनी भौतिक देह का त्याग करते हैं, तब उसे 'महासमाधि' कहा जाता है।

अधिकांश लोगों के लिए, जन्म खुशी लाता है व मृत्यु से दुःख होता है। किन्तु महात्माजन—सन्त व सिद्ध—ऐसे विरोधाभासी भावों यानी द्वन्द्वों में बद्ध नहीं होते। जन्म से लेकर मृत्यु तक, जीवन के नैसर्गिक प्रवाह में, आनन्द से अत्यधिक आनन्द की ओर, प्रकाश से और अधिक प्रदीप्ति की ओर अग्रसर होने की यात्रा है।

किसी भी समय अथवा किसी भी दिन एक महात्मा का सम्मान करना उत्थानकारी होता है। मुझे बाबा जी की एक प्रिय सिखावनी याद आ रही है : "तुम जैसा सोचते हो, वही हो।" जब आप एक महात्मा के बारे में सोचते हैं तो बड़े ही स्वाभाविक रूप से आपकी अपनी महानता आपके अन्तर से प्रवाहित होती हुई आपके मन के किनारों को छू लेती है।

यदि किसी भी दिन एक महात्मा का सम्मान करने से ऐसे फल मिलते हैं तो उनकी महासमाधि के अवसर पर उनका सम्मान करना *और भी* अधिक उत्थानकारी होता है! बुधवार, २० अक्टूबर, २०२१ की पूर्णिमा को हम बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि की ३९वीं चान्द्र तिथि का स्मरणोत्सव मनाएँगे। और हम जिस तरीक़े से बाबा जी का सम्मान करेंगे व स्वयं अपनी महानता का अनुभव करेंगे, वह है, बाबा जी ने पूरे विश्व को जिस समारोह से अवगत कराया, उसमें भाग लेकर : सत्संग।

मैंने बाबा जी के साथ सैकड़ों सत्संगों में भाग लिया है, भारत स्थित गुरुदेव सिद्धपीठ में भी और पश्चिमी देशों की बाबा जी की विश्वयात्राओं के दौरान भी; अतः मैं आपको आश्वासन दे सकती हूँ कि बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में आयोजित इस सत्संग में भाग लेना बिल्कुल वैसा ही होगा जैसे बाबा जी के साथ सत्संग में भाग लेना। बाबा जी के बारे में सोचना, उनकी छवि के दर्शन करना, उन्हें अपने हृदय में खोजना व पाना, अपने स्वप्नों में उनसे मिलना, उनकी पुस्तकें पढ़ना, उनकी सिखावनियों का अध्ययन करना, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर सत्संग में भाग लेना—इन सभी बातों में मुझे यह महसूस होता है कि मैं बाबा जी के साथ हूँ और वे मेरे साथ हैं।

बाबा जी आत्मा के विषय में समझाने व चर्चा करने का कोई भी अवसर चूकते नहीं थे अर्थात् आत्मा के बारे में सिखाना, आत्मा पर व्याख्या करना और यह सुनिश्चित करना कि सिद्धयोग

विद्यार्थी आत्मा का अध्ययन करें और समझें कि आत्मा क्या है। और मैं निश्चित रूप से इस बात की पुष्टि कर सकती हूँ : बाबा जी आत्मा का अनुभव प्रदान करते थे।

इसलिए मैं पाती हूँ कि बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में आयोजित इस सत्संग का यह शीर्षक पूर्णतः सटीक है :

आत्मा का अभिवादन करो

यह सत्संग सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर शनिवार, १६ अक्टूबर शाम से [यू. एस. ए. ईस्टर्न डेलाइट समयानुसार] अक्टूबर माह के अन्त तक उपलब्ध होगा। इसमें निम्न तत्त्व शामिल होंगे :

- 'ज्योत से ज्योत जगाओ' आरती
- बाबा जी की एक सिखावनी से सम्बन्धित एक अनुभव
- बाबा मुक्तानन्द के प्रवचन का एक वीडिओ, जिसका शीर्षक है, "Wherever You Are, Attain the Self"
- सिद्धयोग नामसंकीर्तन, 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय'
- ध्यान

मुझे प्रतीक्षा है जब हम एक-साथ सिद्धयोग सत्संग में भाग लेकर बाबा जी का सम्मान करेंगे और उनकी उपस्थिति व कृपा का आवाहन करेंगे।

आदर सहित
सिन्धु पोर्टर

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।